पुरुषार्थ एवं इसके प्रकार

09.04.2020
B.A II Philosophy (Hons)
IIIrd Paper.

"पुरुषार्थ" शब्द दो शब्दों 'पुरुष' तथा 'अर्थ' के संयोग से बना है। इसीलिए पुरुषार्थ का अर्थ हुआ, जो पुरुष के लिए आवश्यक एवं लाभदायक हो। जिस लक्ष्य से कोई कर्म करता है वह उसे लाभदायक प्रतीत होता है। अतः "व्यक्ति के कर्मों के लक्ष्य को ही पुरुषार्थ कहा जाता है। जिसके लिए मनुष्य को प्रेरणाएँ होती हैं वे ही उसके पुरुषार्थ हैं।" यहाँ भारतीय दृष्टिकोण समन्वयवादी है। जीवन की सभी आवश्यकताओं से इसका संबंध रहता है। यही कारण है कि भारतीय दार्शनिकों तथा विचारकों ने ऐसे चार आदर्श या साध्य बतलाए हैं जो मनुष्य के इहलोक तथा परलोक दोनों के प्रधान लक्ष्य बन जाते हैं। मनुष्य के सभी व्यापार इन चारों आदर्शों से प्रेरित होते हैं। ये चार पुरुषार्थ हैं– अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष। इन चारों पुरुषार्थों के लिए अलग-अलग शास्त्र भी हैं। अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, धर्मशास्त्र तथा मोक्षशास्त्र। अर्थशास्त्र में चाणक्य के विचार, कामशास्त्र में वात्स्यायन का कामसूत्र, धर्मशास्त्र में मनुस्मृति और मोक्षशास्त्र के लिए उपनिषद्, गीता इत्यादि प्रामाणिक हैं। अब हम इन चारों पुरुषार्थों का अलग-अलग विवरण प्रस्तुत करेंगे।

अर्थ– अर्थ, धन या संपत्ति मानव जीवन के लिए आवश्यक है। बगैर धन के व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी नहीं की जा सकती है। जीने की प्रवृत्ति जन्मजात है इसीलिए धन का महत्व भी निर्विवाद है। वर्तमान भौतिक युग में अर्थ एवं धन पर ही सर्वस्व निर्भर है। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है (तथा महसूस भी किया जाता है) जिसके पास धन है, वही कुलीन है, वही पंडित है, श्रुतवान और गुणी है, वही दर्शनीय है और स्वर्ण की भाँति उसमें सभी गुण विद्यमान हैं। भर्तृहरि धन को ही सभी सुखों का खान मानते हैं। चाणक्य के "कलतानुरा" वाणी पर लगा हुआ घाव शीघ्र ही दूर हो जाता है।" यानि अर्थ का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। किन्तु अधिकांश भारतीय दार्शनिक अर्थ की महत्ता स्वीकार करते हुए भी, इसे परम साध्य नहीं मानकर साधन मात्र मानते हैं। उपनिषदों ने स्पष्ट कहा है कि सांसारिक वस्तुओं की इच्छा भी वर्जित नहीं है यदि वे उच्चतर लक्ष्यों को प्राप्त करने का साधन हो। बुद्धिमान मनुष्यों के लिए भी यह वांछनीय है। उपनिषदों के द्वारा गार्हस्थ्य-आश्रम की कल्पना इस बात का प्रमाण

है कि अर्थ और काम को भी जीवन में महत्व देते हैं यदि उन्हें सर्वोच्च लक्ष्य का साधन माना जाय।

काम — काम मनुष्य का मौलिक पुरुषार्थ माना गया है। काम शब्द सामान्य अर्थ में व्यवहृत होता है तथा विशेष अर्थ में भी। सामान्य अर्थ में विषयानुभवजन्य सुख काम है। अर्थात बाह्य वस्तु जो सुखद प्रतीत हो, उसके अनुभव की इच्छा काम है। काम के अन्तर्गत केवल इन्द्रियजन्य सुख ही नहीं, बल्कि मानसिक सुख भी आ जाते हैं। सुख और आनन्द दोनों इसके अन्तर्गत आते हैं। किसी भी सुखप्रद वस्तु की इच्छा काम है, जो चाहा जाय। विशेष अर्थ में काम का अर्थ इन्द्रिय सुख है।

हिन्दू दर्शन में काम को सदैव वृहत अर्थ में लिया जाता है। यहाँ इन्द्रियों के दमन की बात न ही कही जाती है। इन्द्रिय पर नियंत्रण रखते हुए उन्हें तृप्त करना आवश्यक समझा जाता है। इन्द्रियों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों को कभी भी कुचलने की सलाह न ही दी जाती है। यौन सुख का भी कम महत्व न ही है। डा० राधाकृष्णन के शब्दों में "हिन्दू धर्म में यौन जीवन को किसी भी प्रकार अनैतिक नहीं माना गया है"। हिन्दुओं के महान देवताओं यथा - ब्रह्मा, विष्णु, श्रीराम, श्रीकृष्ण इत्यादि ने भी वैवाहिक जीवन व्यतीत किया। हिन्दू धर्म व्यक्ति की इच्छाओं, वासनाओं एवं कामनाओं को नियंत्रित रूप में तृप्त करने का आदेश प्रदान करता है किन्तु कामवासना में लिप्त होने की सलाह नहीं देता क्योंकि कामतृप्ति में हमें अपने विवेक एवं मर्यादा को भूलना नहीं चाहिए। भारतीय विचारक काम को परमसाध्य न मानकर मात्र एक मोक्ष प्राप्ति का साधन मानते हैं।

धर्म — धर्म की अवधारणा का उपनिषदों में विशेष महत्व है। अर्थ तथा काम दोनों को इसके अन्तर्गत होना चाहिए। तभी सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। धर्म का अर्थ है धारण करने योग्य कर्म, अतः नैतिक कर्मों का आचरण ही धर्म है। कर्तव्यों का पालन, नियमानुकूल अर्थात शास्त्रों के अनुकूल

कर्म ही धर्म है। धर्म निःश्रेयस (मोक्ष) की प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह लौकिक तथा पारलौकिक दोनों प्रकार की सिद्धियों में सहायक है। मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैं — धैर्य, क्षमा, इन्द्रियनिग्रह, मानसिक संयम, अंतर्बाह्यशुद्धि, अस्तेय, धी, विद्या, सत्य और क्रोध का अभाव।

मोक्ष — : चौथा तथा अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष है। संसार के बंधनों से छुटकारा की इच्छा ही मोक्ष पुरुषार्थ है। संसार दुःखमय है। मनुष्य दुःख से छुटकारा चाहता है किन्तु जबतक कर्मबंधन से छुटकारा न हो जाय, पुनर्जन्म होगा ही तथा मनुष्य बंधन अर्थात् दुःख में रहेगा। संसार से छुटकारा तथा दुःख से निवृत्ति ही मोक्ष कहा जाता है। मोक्ष यानि जीवन-मरण से मुक्त होना ही मोक्ष है। दूसरे शब्दों में मोक्ष एक ऐसी अवस्था है जहाँ दुःखों का पूर्ण अभाव रहता है।

मोक्ष दो प्रकार के होते हैं — जीवनमुक्ति और विदेहमुक्ति। जैन, बौद्ध, सांख्य तथा वेदान्त स्वीकार करते हैं कि इसी जीवन में शरीर धारण करते हुए भी व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसे जीवनमुक्ति कहते हैं। मृत्यु के उपरान्त प्राप्त होने वाला मोक्ष विदेहमुक्ति कहा जाता है।

भारतीय विचारक तथा दार्शनिक यह स्वीकार करते हैं कि बंधन ही दुःख का मूल कारण है। बंधन स्वयं अविद्या या अज्ञान का फल है। अतएव सर्वप्रथम अज्ञान का नाश आवश्यक है। अज्ञान का नाश ही बंधन का नाश तथा मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग है।

यहाँ यह भी प्रश्न उठता है कि चारो पुरुषार्थों में कौन प्रमुख है तथा कौन गौण। स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुरूप काम का स्थान प्रथम, तब अर्थ का, तब धर्म का और सबसे अंत में मोक्ष का। साधारण मनुष्य काम और अर्थ को ही जीवन का चरमलक्ष्य या परमलक्ष्य मानता है किन्तु इन दोनों का उपयोग धर्म के बिना निंदनीय माना जाता है। धर्मविहीन काम तथा अर्थ निंदनीय माने जाते हैं। आदर्श के दृष्टिकोण से मोक्ष ही सबसे प्रमुख पुरुषार्थ है, जिसकी प्राप्ति के लिए अन्य पुरुषार्थ साधनमात्र हैं।

डा० सन्तोष कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र
जनजीवन सिंह महाविद्यालय,
विक्रमगंज (रोहतास)।
दिनांक: 09.04.2020